शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# राजेन्द्र मोहन भटनागर के उपन्यासों में स्वाधीनता आन्दोलन के विविध पक्ष

प्रमीला
शोधार्थी (हिन्दी),
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान, भारत

## शोध संक्षेप

*भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हमें दासता की एक लंबी कहानी मिलती है। जितनी लम्बी दासता रही, उतनी ही लम्बी रही संघर्ष एवं शोषण की कहानी। स्वाधीनता प्राप्ति के लिए भारत ने जो संघर्ष भरा इतिहास रचा है उसका वर्णन राजेन्द्र मोहन भटनागर ने अपने तटस्थ दृष्टिकोण से अपने उपन्यासों में किया है। उनके उपन्यासों का आधार मुख्यतः वे जीवनियाँ ही रहीं, जो कि अपने-अपने जीवन-चरित् और व्यक्तित्व के आधार पर स्वाधीनता प्राप्ति के संघर्ष को व्याख्यायित करती हैं। जिन जीवन चरित्रों का वर्णन उनके उपन्यासों से मिलता है, वे राजनीतिक आयाम से संबंधित हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में राजेंद्र मोहन भटनागर के उपन्यासों में राजनीति के विविध आयामों पर विचार किया गया है।*

## प्रस्तावना

उपन्यासकार राजेंद्र मोहन भटनागर ने अपने उपन्यासों में भारत की स्वाधीनता के लिए स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा किये गए प्रयासों का निष्पक्ष दृष्टि से चित्रण किया है। जीवन चरित्रों के माध्यम से उन्होंने देश के राजनीतिक घटनाक्रम को समझाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने तत्कालीन संकीर्णताओं का खण्डन किया है- ''अगर समाज किसी व्यक्ति को विषय के रूप में चुनकर उसकी जिन्दगी को आकार देने वाले तथ्यों के आधार पर उपन्यास गढ़ा जाए तो सबकुछ गड्डमड्ड हो जाता है, क्योंकि जिंदगी का आकार महज ज्ञात तथ्यों से बुना नहीं जा सकता - कई छोटे-छोटे लम्हें, जिन्हें व्यक्ति अज्ञात रूप से जीता है, जिन्दगी के स्वरूप को गढ़न प्रदान करते हैं। यही वजह है कि राजनेताओं के जीवन की घटनाओं के सूत्र पकड़ कर उनका जीवन वृत्तान्त, जीवन चरित् अथवा बायोग्राफी जैसी कोई चीज तो लिखी जा सकती है, लेकिन उपन्यास नहीं। वैसे भी हर व्यक्ति के जीवन में औपन्यासिक तत्व नहीं होते; और यदि होते हैं, तो भी राजनेताओं के जीवन के इन तत्वों पर विवाद बड़ी जल्दी पैदा हो जाता है, फिर भी कुछ लोग चाहते मानते नहीं- वे समाज से विषय रूप में चुनी गई जिन्दगी को सिक्के की तरह हर पहलू से उलट-पुलट कर देखते हैं और अपने लेखन के लिए सामग्री संकलन कर लेते हैं।''

## स्वाधीनता आन्दोलन के विविध पक्ष

एक सच्चा साहित्यकार व्यक्ति-विशेष के बारे में लिखता हुआ उलझता नहीं; वह किसी मोह बंधन में नहीं बंधता। राजेन्द्र मोहन भटनागर ने सच्चे साहित्यकार की भाँति व्यक्ति-पूजा नहीं की बल्कि जीवन-चरितों में पूर्णतया स्पष्टता और

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तटस्थता का परिचय दिया है। उन्होंने राजनीति की व्याख्या भी निष्पक्ष रूप से की है। भटनागर ने इन राजनायकों का एक ही पक्ष चित्रित नहीं किया बल्कि प्रत्येक पक्ष को समक्ष रखा है। गाँधी जी इस क्षेत्र में सर्वोपरि रहे, परन्तु फिर भी उनकी नीतियाँ पूर्ण रूप से प्रामाणिक और व्यावहारिक थी ऐसा नहीं था, क्योंकि अनेक लोगों को उनमें संदेह झलकता था- "राजनीति काव्याभ्यास नहीं है। उसमें हृदय के स्थान पर बुद्धि-विवेक केन्द्र में है। वहाँ भक्ति-श्रद्धा आदि की जरूरत नहीं है। भक्ति व्यक्ति तक सीमित है। उसे सब पर आरोपित करना गलत है। भक्ति हारे मन की शक्ति है, दिशाहीनता के लिए मार्ग। गाँधी जी राजनीति में भक्ति ला रहे हैं और कांग्रेस की कीर्तनियों का मनोव्यवहार पैदा कर रहे हैं। निस्संदेह...यही इस देश के भाग्य को आत्मघाती दिशा में ले जाएगा।" परन्तु गाँधी जी राजनीति क्षेत्र में स्वयं को अत्यधिक महत्व देते थे। वे तत्कालीन राजनीति के लिए धैर्यपूर्वक गतिविधियों को सुचारु करने के पक्ष में थे।

स्वाधीनता आन्दोलन रूपी यज्ञ में सभी स्वतंत्रता सेनानी अपने-अपने दृष्टिकोण से होम डाल रहे थे। महात्मा गाँधी ने विभिन्न आन्दोलन चलाए, परन्तु मार्ग अहिंसा का ही रखा। जबकि भगतसिंह, राजगुरु और सुभाषचन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारियों ने हिंसा का मार्ग अपनाकर आजादी प्राप्त करनी चाही। सभी का लक्ष्य स्वाधीनता प्राप्ति था, इसलिए किसी के भी संघर्ष व त्याग को कम नहीं आंका जा सकता। राजेन्द्र मोहन भटनागर ने इस त्याग भावना का आदर करते हुए उन्हें लेखनीबद्ध किया है। सुभाषचन्द्र बोस जैसे क्रांतिकारियों को ब्रिटिश सरकार के अधीन नौकरी करना हतोत्साहित कर रहा था। इसी कारण उन्होंने सरकारी नौकरी का त्याग किया। उनके विचारों को मान देते हुए भटनागर ने व्याख्यायित किया है- "मैं जानता हूँ कि नौकरी छोड़कर यदि मैं कमर कसकर देश के कामों में लग जाऊँ तो करने योग्य बहुत से काम मिल जायेंगे, जैसे राष्ट्रीय विद्यालय में शिक्षण, पुस्तक और समाचार-पत्र प्रणयन, प्रकाशन ग्राम्य समिति-स्थापन, जन साधारण में शिक्षा का प्रसार आदि।" इसी प्रकार उपन्यासकार ने डॉ.भीमराव अम्बेडकर के जीवन पर भी प्रकाश डालते हुए उनके नौकरी त्याग करने के विषय को महत्व दिया है। वे छुआछूत व भेदभाव से अत्यधिक चिन्तित थे। वे इस भेदभाव को समाप्त करने के संघर्ष और लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में सरकारी नौकरी को सबसे बड़ी बाधा मानते थे। "वे निर्धन भी थे और रोजगार के प्रति चिंतित भी। उनके मन में यह बात घर कर गई थी कि मानव-धर्म की स्थापना करना और शोषण विमुक्त जन-जीवन को बनाना ही उनके जन्म लेने का अर्थ है। नौकरी करके वे यह सब बात नहीं कर सकते हैं। उनके इस निर्णय ने ही उन्हें प्रोत्साहित किया था कि वे जीने के लिए मरने की चिन्ता न करें और वही करें जिससे उनकी आत्मा को शान्ति मिले। और मूक जन-मानस को न्याय और सम्मान मिले।" उन्होंने ऐसा ही किया। छुआछूत का विद्रोह किया और देश में मानव धर्म की स्थापना की।

सरकार द्वारा प्रदान किए गए पदों का त्याग ही नहीं बल्कि उनकी प्रत्येक वस्तु का बहिष्कार आवश्यक था। महात्मा गाँधी ने इस तथ्य को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। और इसी के संबंध में विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं के बहिष्कार का नारा व आन्दोलन छेड़ दिया। भटनागर ने इसके प्रभाव को वर्णित किया है- " उस समय 'प्रिन्स आफ वेल्स' के भारत आगमन पर भारतीय

राष्ट्रीय कांग्रेस ने उनके बायकाट का प्रस्ताव पारित कर सम्पूर्ण देश में हड़ताल का आह्नान किया...। भारत में जो हड़तालें हुईं और जो प्रदर्शन हुए उनसे हालात और भी निराशाजनक हो गए।'' विदेशी कम्पनी के उद्देश्य को भारतीय जान चुके थे। भारतीयों को अपने अधीन करने का गुप्त उद्देश्य व्यापार की आड़ में ज्यादा समय छिपा न रह सका। उनके व्यापारिक लक्ष्यों की विफलता अधिक अनिवार्य थी। उस समय की परिस्थितियों और विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के प्रभाव ने इस ओर कदम बढ़ाए। भटनागर ने इन्दिरा गाँधी के बचपन के अंश को इसी रूप में प्रस्तुत किया है। बाल-मन में अबोध विचारों का रूप है- ''लंका शायर के बने कपड़ों की होली उसने देखी। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार उसके लिए आनंद का विषय था। विदेशी कपड़ों का ढ़ेर लगाया जाता और फिर उनको माचिस दिखा दी जाती। लौ आकाश छूने लगती और मन-ही-मन नाच उठती। उसे क्या मालूम था कि लड़ाई का यह जबर्दस्त तरीका था। इसके कारण अंग्रेजी सरकार परेशानी में पड़ गई थी। जब विदेशी कपड़ा कोई खरीदेगा ही नहीं, तो उन्हें आमदनी कैसे होगी ? अंग्रेजी सरकार के लिए यह गहरी चिन्ता का विषय था। मशीनों के आविष्कार ने योरुप में एक क्रान्ति ला दी थी। सारा योरुप मंडी की तलाश में निकल चुका था और भारत से अंग्रेजों की मण्डी उठ रही थी।'' भारत में 19वीं सदी के मध्य तथा उत्तरार्द्ध को जागृति का युग कहा जा सकता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। 'एम.एल. धवन' ने अपनी पुस्तक, ''भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतंत्रता संघर्ष (1857-1914) ई. भाग-1'' की भूमिका में ही ठीक ही लिखा है कि- ''भारत में अंग्रेजी राज्य का प्रारम्भ 1757 ई. में प्लासी युद्ध से हुआ है। वहाँ पर अंग्रेजों ने छलकपट और फूट डालने की नीति के कारण विजय प्राप्त की है।'' उपन्यासकार ने इस क्रान्ति के प्रत्येक पक्ष पर दृष्टि डाली है। क्रान्ति का प्रचार-प्रसार करना भारतीय सेनानियों के लिए आवश्यक था। वो भी इस तरह से कि अंग्रेज अधिकारियों को पता न चले। इस कारण से गुप्त सूचनाएँ आदान-प्रदान करने के लिए रोटियाँ व पूरियाँ बाँटी जाती थी। ''क्रान्ति 31 मई, 1857 को शुरु होनी थी। फकीर और साधुओं ने एक छावनी से दूसरी छावनी तक घूम कर गुप्त रूप से सूचनाएँ पहुँचा दी थी, जिन पर पहले तो अंग्रेज अफसरों का ध्यान ही नहीं गया।''

## निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि राजेन्द्र मोहन भटनागर ने औपन्यासिक साहित्य में स्वाधीनता आन्दोलन के विविध पक्षों को वर्णित किया है। उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस और अम्बेडकर जैसे नेताओं के निःस्वार्थ त्याग का परिचय ही नहीं दिया, अपितु विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार संबंधी आंदोलनों की मुख्य कड़ियों को भी लेखनीबद्ध किया है।

## संदर्भ सूची

*1 टी.पी., डेली हिन्दी मिलाप, 20 अक्टूबर*
*2 राजेन्द्र मोहन भटनागर, कुली बैरिस्टर, पृ. सं. 245*
*3 राजेन्द्र मोहन भटनागर, दिल्ली चलो, पृ. सं. 16*
*4 राजेन्द्र मोहन भटनागर, युग पुरुष अम्बेडकर, पृ. सं. 98*
*5 जवाहरलाल नेहरू, मेरी कहानी, पृ. सं. 121*
*6 राजेन्द्र मोहन भटनागर, इन्दिरा प्रियदर्शिनी, पृ. सं. 57*
*7 एम. एल. धवन, भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतन्त्रता संघर्ष (1857-1914 ई.), भाग-1, पृ. सं. 7-8*
*8 राजेन्द्र मोहन भटनागर, आजादी की पहली लड़ाई, पृ. सं. 23*